मैं M Ram अपनी इस रचना में अपने साथ बीते पल आपके साथ शेयर कर रहा हूँ ।
कृपया रचना को पढ़े और अपनी राय यहाँ भेजे – myankdewasi@gmail.com

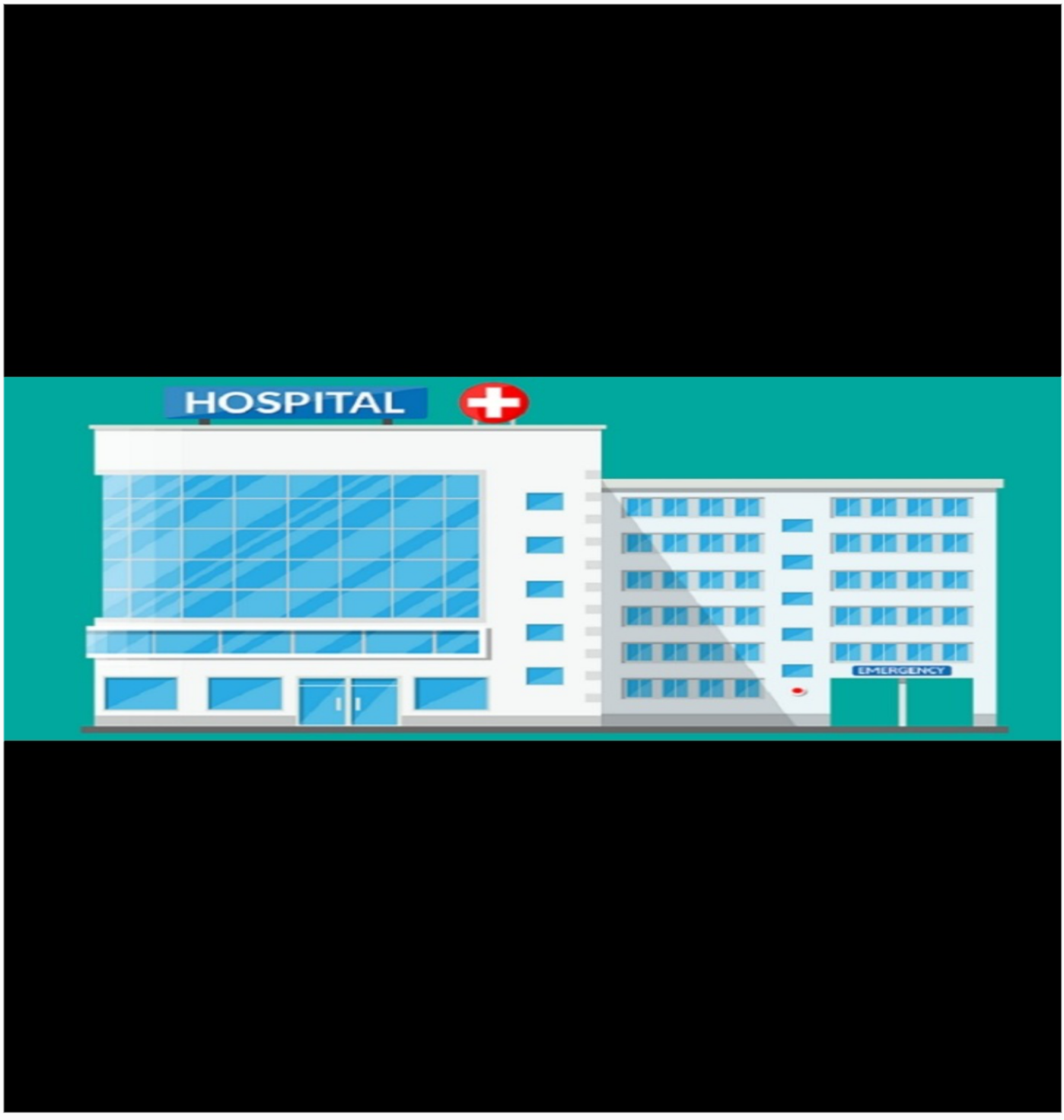

कोविड़ के इन दिनों मे जहाँ पर लोगों की मृत्यु दर इतनी बढ़ चुकी है लोग दवाओं , ऑक्सीजन सिलेण्ड़रों , कोविड़ वैक्सीन इत्यादि सभी जरूरी चीज़ों के अभाव के कारण मर रहें है । ऐसे में कहीं लोग दवाईयों की कालेबाजारी करनें में लगें है । अस्पतालों में बैड़ नहीं मिल रहे है , पेसेन्ट्स की सही जाँच नहीं हो रही है , अस्पतालों का ये आलम है कि डाँ॰ भी अस्पतालों में नहीं मिलते है लेकिन ऐसें वक्त में भी कहीं लोग है जों राष्ट्र की सेवा के लिए सामनें आयें है । ऐसे कहीं है जो राष्ट्र की सेवा करनें के लिए सबकुछ दाव पर लगा रहें है इसका एक अच्छा उदाहरण

सोनू सुद है । जो राष्ट्र की सेवा में कितना कुछ कर चुकें है और मैं इस बात कों दावे से कह सकता हूँ कि इस समय की गई इनकी ये मदद आने वाले समय में इन्हें रिटर्न जरूर देगी ।

हाल हीं मे मुझें एक अस्पताल में जाना पड़ा जहाँ मै 6 दिन रूका । इसका ही वर्णन में इसमें किया है ।

ये मेरे उन दिनो की बात है जब मेरे पापा को कोविड़ हो गया था और उन्हें हॉस्पिटल में ऐडमिट किया गया था । जब हम वहाँ पहले दिन पहुँचे तो पापा का चेकअप हुआ और पनजी वार्ड में ऐडमिट किया गया उस वार्ड में लगभग 5 पेसेन्ट थे । वहां पर जो पहला पेसेन्ट था वो एक बुढे आदमी थे जो लगभग 6 7 दिन से ऐडमिट थे जिन्हे अगले दिन डिस्चार्ज किया जाना था । दुसरे पेसेन्ट जो बिल्कुल फिट थे जो लगभग 2 दिन से

ऐडमिट थे लेकिन ये व्यक्ति बिना मतलब की चिंता करता रहता था और ऑक्सीजन लेवल और कोविड रिपोर्ट नेगेटिव होने के बावजूद भी जिद् किये जा रहा था की उसकों ऐडमिट रखा जाये और ट्रिटमेंट भी जारी रखा जाये । तीसरा पेसेन्ट जो था उसकी रिपोर्ट पॉजिटिव थी लेकिन उसका स्वास्थ्य ठीक था और उसकी फैमिली उस पर बार बार ये दबाव बना रहीं थी कि इतनें पैसों का क्या करोंगें ?चलो किसी बड़े अस्पताल में भर्ती किया जाये जो २ दिन बाद हुआ भी और उसे उसकी बिना इच्छा के फैमिली के दबाव में अहमदाबाद किसी अस्पताल में ले जाया गया । चौथा पेंसेन्ट बड़ा ख़ास था क्योंकि वो खुद मेल नर्स था और ठीक होनै के बाद भी खुद को अंतिम स्तर का कोरोना मरीज समझ रहा था उसने लगभग १२ १३ दिन वहाँ रूका और इन

दिनों में कहीं बार वो हास्पिटल से बाहर गया चाहें वो किसी मेडिकल टेस्ट को लेकर ही क्यों न हो ।
पाँचवे पेसेंट मेरे पापा थे जिन्हें कोविड हो गया था और उनकी सांस हो रही थी और उन्हे ऑक्सीजन पर ६ दिन रखा गया था ।
सुबह सुबह अस्पताल में चाय और नास्ता जिसमें उपमा या पौहै होते थे वो फ्री मिलते थे और दोपहर और रात को खाना फ्री मिलता था और शाम को फ्री चाय मिल जाती थी ।
अस्पताल में अच्छी स्वच्छता थी इसके बावजूद के वो सरकारी अस्पताल था और भारत में सरकारी अस्पतालों को लेकर जो छवि है उससे बिल्कुल विपरीत था ये रूपचंद ताराचंद सरकारी अस्पताल जो उन सभी लोगों पर तमाछा था कि सरकारी अस्पतालों में स्वच्छता नहीं रखी जा सकती

।
अस्पताल के अन्दर एक पानी की प्याऊ थी जहां फिल्टर पानी मिलता था । प्याऊ के आस पास कहीं फुलों के पौधे थे ।
वहाँ पर सारे डाँ॰,नर्सेस बहुत अच्छे स्वभाव के थे वहाँ पेसेन्ट की टाईम टू टाईम हेल्थ कण्डीशन चेक की जाती थी ।
मेरे पापा के साथ मैं और मेरे चाचा थे ।
और बाकि के पेसेन्ट के पास एक एक जन रूके हुए थे । जो नर्स पेसेन्ट थे उसके पास उसकी माँ थी जो बहुत ज्यादा फ्रेक थी और उन माँ बैटे मे हर बात पर बहस होती जिसमें हर बार वो माँ जीत जाती थी क्योंकि माँ तो माँ होती है अपनें बच्चे का अच्छा बुरा उससे पहले और उससे अच्छा जानती है । पहला दिन बड़ी मुश्किल से गुजर गया शाम कों खाना आया हमनें खाया और मैं सो गया और मेरे चाचाजी

पुरी रात जागनें वाले थे क्योंकि पापा के ध्यान रखनें वाला कोई चाहिए था तो दिन में मैं और रात को चाचाजी ध्यान रखते थे ।
इन सब में एक मजेदार बात ये है कि हमकों 4 दिन तक ये पता ही नहीं चला की दोपहर को खाना भी आता है इसलिए हम चार दिन सुबह के नास्ते और शाम के खाने और बिस्कूट पर रहें क्योंकि लॉकडाउन के कारण सबकुछ बंद था । और ये बात का पता इस कारण से नहीं चला कि सुबह नास्ता वार्ड में देने आते थे और शाम को कहते थे कि खाना आ गया है लेकिन दोपहर को नहीं बताया क्योंकि बाकि के पेसेन्ट आस पास के ही थे इसलिए उनके टिफीन घर से आ जाते थे और हमारा घर दूर था अस्पताल से इस कारण हमारा टिफीन रोज नहीं आ पाता था ।
दुसरे दिन सुबह अस्पताल के प्रमुख डॉ॰

कुनमिया वहाँ आये सब को चेक किया और मेरे पापा की कण्डीशन के सुधार होनें की सुचना दी और आगें के इलाज जारी रखें । अब वो माँ बेटे हमारे मनोरंजन का साधन बन चुके थे क्योंकि उनकी बातचीत सबकों आनन्दित कर देते थे । स्वभाव से बहुत अच्छे थे और अगले दिन वे डिस्चार्ज होने वाले थे । इसके साथ वे भी अब अहमदाबाद जा रहे जिसके परिवार वाले उन पर दबाव डाल रहें थें । वो बुढे व्यक्ति भी आज डिस्चार्ज हो गये थे ।

सुबह चाय नास्ता आया जिसके करनें के बाद हमने सीधे रात को खाना खाया । शाम को चाय आयी । इसके दिन के बाद अब अस्पताल कुछ अच्छा लग रहा था । तीसरे दिन वो माँ बेटे जा चुके थे , वो पैसेन्ट जिन पर दबाव था वो जा चुके थे साथ ही वो बुढे पेसेन्ट भी चले गये । अब उस पुरे वार्ड में z

पेसेन्ट थे और तीन लोग जो अटेण्ड़र थे ।
तीसरा दिन भी ऐसे ही गुजरा सुबह डाँ॰ आये चेक किया । दोपहर को गुल्कोज चढ़ाया और रात को इंजेक्शन लगाया और रात को खाना खाकर सो गये ।
चौथा दिन हमारे वार्ड में एक पेसेन्ट आया उस पेसेन्ट की तबीयत ठीक लग रही थी । बुखार आने के कारण यहाँ भर्ती हो गया था और वो बहुत खर्राटे लेता था । बाकि का दिन ऐसे ही गुजरा लेकिन एक बात तो भारत की माननें योग्य है कि यहाँ भले ही लोगों को कितना भी समझाया जाये की आपकों मुँह पर मास्क लगाना है , सोशल डिस्टेसिंग रखनी है और हमारे प्रधानमंत्री मोदी भी कही बार कह चुके है लेकिन लोगों को तो करना वहीं है जो उनका मन चाहता है। उनकों किसी की सुननी नहीं है और इन सब का एक कारण ये नेता ही है जब

जनता बाहर घुमें , मास्क न पहनें , दूरी न रखे तो कोरोना और जब ये नेता चुनाव की रैलियाँ निकालते है वहाँ ये सब हो तो कोई कोरोना नहीं इन्ही कारणों से भारत की जनसंख्या का एक वृहत भाग उदासीन है और उदासीन ही रहेगा जब तक उनमें शिक्षा का स्तर , राजनीतिक समझ इत्यादि प्रयास नहीं किये जाते है और मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि 2014 के बाद भारत ने तीव्र गति से विकास किया है । चाहे वो राजनीति के माध्यम से हो या जियों के सस्ते इंटरनेट डाटा के कारण । जियों के सस्ते डाटा के कारण आज भारत का जनमानस जानकारियों के ऐसे भंवर मे फसा है जिसमें उसकों ये तय करना है कि कौनसी खबर उसके लिए सही है और कौनसी नहीं ।

हाँ , तो चलते है हमारे पाँचवे दिन पर सुबह

चाय नास्ता आया तो चायेवाले से उससे पुछा की दोपहर को नास्ता आता है तो उसनें कहा तब हमें पता चला कि हम चार दिन से बेकार में भुखे रहे ।
इस दिन डाँ॰ ने पापा की आँक्सीजन निकाल देने और ठीक न लगने पर वापस लगाने का परामर्श दिया क्योंकि पापा अब बिल्कुल ठीक थे । आज हमारे वार्ड में कोई पेसेन्ट नहीं था सभी डिस्चार्ज हो गये थे आज हम अकेले थे । दोपहर को आज पहली बार अस्पताल में खाना मिला था । शाम को चाय और रात को नास्ते के बाद रोज की तरह शाम को चेकअप के बाद हम सो गये ।
अगले दिन सुबह सुबह की चाय और नास्ता किया और अचानक डाँ॰ आये और हमें डिस्चार्ज करनें को बोला और सुबह करीब ।। बजे हमे हाँस्पिटल से डिस्चार्ज कर

दिया गया । हमनें एक कार बुक की और घर की और चले गये ।
लेकिन ये 6 दिन मेरें जीवन में अविस्मरणीय थें ।
और कोरोना महामारी में ऐसी सुविधा मिलना बदलते भारत की निशानी है ।